Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

इतिहास

(History)

N-315

Chapter wise Reference Book Including MCQ's & Many Solved Sample Papers

Based on

N.I.O.S. *Class* – XII

National Institute of Open Schooling

By :
Manish Kumar

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 420/-

CONTENTS

इतिहास
(HISTORY)

Based on: NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING – XII

S.No.	*Chapters*	*Page*
	Solved Sample Paper - 1	**1–6**
	Solved Sample Paper - 2	**1–7**
	Solved Sample Paper - 3	**1–6**
	Solved Sample Paper - 4	**1–5**
	Solved Sample Paper - 5	**1–6**

S.No.	*Chapter*	*Page*
	प्राचीन भारत (Ancient India)	
1.	भारत के इतिहास को समझना (Understanding Indian History)	1
2.	भारत का भौगोलिक परिवेश और प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ (The Geographical Setting and Pre-historic Cultures of India)	8
3.	हड़प्पा सभ्यता (The Harappan Civilization)	16
4.	वैदिक काल : 1500 ई.पू. – 600 ई.पू. (The Vedic Age: 1500 BC – 600 BC)	24
5.	जनपद से साम्राज्य की ओर (From Janapadas to Empire)	39
6.	मौर्योत्तर विकास (Post-Mauryan Developments)	49
7.	गुप्त वंश तथा उनके उत्तराधिकारी : 300–750ई. (The Guptas and their Successors: AD 300–750)	58
8.	750–1200 ई. के मध्य भारत (India between AD 750-1200)	72

S.No.	Chapter	Page
	मध्यकालीन भारत (Medieval India)	
9.	दिल्ली सल्तनत की स्थापना और विस्तार (Establishment and Expansion of the Delhi Sultanate)	80
10.	मुगल शासन की स्थापना (Establishment of Mughal Rule)	89
11.	भारत में प्रादेशिक राज्यों का उदय : 12वीं से 18वीं शताब्दी तक (Emergence of Regional States in India: 12th to 18th Century)	97
12.	प्रशासनिक प्रणाली तथा संस्थाएँ (Administrative System and Institutions)	104
13.	मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था (Economy of Medieval India)	115
14.	मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक विकास (Cultural Development in Medieval India)	128
15.	18वीं शताब्दी में भारत की स्थिति (Position of India in 18th Century)	140
	आधुनिक भारत (Modern India)	
16.	1857 तक भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना (Establishment of British Rule in India till 1857)	153
17.	ब्रिटिश उपनिवेशवाद के आर्थिक प्रभाव (Economic Effects of British Colonialism)	160
18.	आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन (Social Changes in Modern India)	166
19.	कंपनी शासन का जन-विरोध (Public Resistance to Company Rule)	176
	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन तथा तत्कालीन भारत (Indian National Movement and Contemporary India)	
20.	राष्ट्रवाद (Nationalism)	181
21.	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन तथा भारतीय प्रजातंत्र (Indian National Movement and Indian Democracy)	188
	20वीं शताब्दी का विश्व (20th Century World)	
22.	सन् 1900 में विश्व : 19वीं शताब्दी का महत्त्व (The World in 1900: The 19th Century Legacy)	197
23.	प्रथम विश्व युद्ध और रूसी क्रान्ति (World War I and the Russian Revolution)	203

S.No.	Chapter	Page
24.	अंतर-युद्ध अवधि और द्वितीय विश्व युद्ध (The Inter-War Period and the Second World War)	209
25.	शीत युद्ध युग व उसके प्रभाव (The Cold War Era and its Effects)	214
26.	राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन, विऔपनिवेशीकरण तथा विकास, 1945 से अब तक (National Liberation Movements, Decolonization and Development, 1945 – Present)	219
27.	20वीं शताब्दी में सांस्कृतिक सामाजिक रूपांतरण (Social Transformation in 20th Century)	223
28.	20वीं शताब्दी में सांस्कृतिक परिवर्तन (Cultural Changes in 20th Century)	230
	वैकल्पिक मॉड्यूल	
	A: भारत में राज्यों का विकास (Evolution of States in india)	
29A.	राज्य-निर्माण की ओर (Towards the Formation of the State)	234
30A.	प्रारंभिक राज्य (Early States)	238
31A.	मध्यकालीन राज्य (The Medeival States)	243
32A.	औपनिवेशिक राज्य (Colonial States)	248
	वैकल्पिक मॉड्यूल	
	B: भारत में संस्कृति (Culture in India)	
29B.	समसामयिक सांस्कृतिक स्थिति (Contemporary Cultural Situation)	252
30B.	सांस्कृतिक उत्पादन (Cultural Production)	257
31B.	सांस्कृतिक संचार (Cultural Communication)	261

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Solved Sample Paper - 1

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

इतिहास – XII

(History)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 100*

नोट : *(i)* इस प्रश्न-पत्र में **दो** खण्ड हैं–खण्ड 'अ' अथवा खण्ड 'ब'।

(ii) खण्ड 'अ' के **सभी** प्रश्नों को हल करना है।

(iii) खण्ड 'ब' में दो विकल्प हैं। परीक्षार्थियों को केवल **एक विकल्प** के ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

(iv) प्रश्न संख्या **1** से **4** तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में, प्रश्न संख्या 5 से **11** तथा **17** तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों में और प्रश्न संख्या **12** से **15** तथा **18** तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में दीजिए।

खण्ड-अ

प्रश्न 1. गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन किस जगह पर दिया था? इस घटना को क्या नाम दिया गया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-41, प्रश्न 3

प्रश्न 2. मेसोलिथिक संस्कृति से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–पाषाण काल के बाद मध्य पाषाणकाल का आगमन हुआ। इस काल में मानव पाषाण काल की अपेक्षा कुछ उन्नत था। भारत में इस काल का प्रारंभ 10,000 ई.पू. के आस-पास माना जाता है। इस काल में अनेक परिवर्तन हुए। तापमान में वृद्धि हो गयी। इस काल में भी मानव मुख्य रूप से शिकार एवं खाद्य संग्रहण पर ही निर्भर था। परन्तु इस काल में मानव ने मछली एवं अनेक जानवरों को पालना आरंभ कर दिया था। इस काल के उपकरण आकार में अत्यंत छोटे थे। औजार त्रिकोण, अर्ध-चन्द्रकार, एवं समलंबाकार थे। भारत के विभिन्न भागों से मध्य पाषाण कालीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। मध्य प्रदेश के भीमबेतका, गुजरात के लघंनाज, उत्तर प्रदेश की बेलन घाटी, पश्चिम बंगाल में वीर भानपुर, कर्नाटक में संगनकल्लु इत्यादि स्थानों पर मध्य पाषाण कालीन अवस्था के चिह्न प्राप्त हुए हैं।

प्रश्न 3. बाबर का भारत आगमन (1526) महत्त्वपूर्ण क्यों माना जाता है?

उत्तर–बाबर प्रसिद्ध मंगोल नेता चंगेज खान एवं तैमूर के वंश से सम्बन्धित था। मध्य एशिया की अराजक स्थिति ने बाबर को भारत की तरफ बढ़ने के लिए प्रेरित किया। दुर्भाग्यवश इस समय भारत की राजनैतिक स्थिति भी काफी अस्त-व्यस्त थी। लोदी सुल्तान इब्राहिम लोदी के कार्यों से चारों ओर अराजकता का वातावरण उत्पन्न हो गया था। विभिन्न अमीरों ने दिल्ली सल्तनत को विनाशकारी आघात पहुँचाने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित करके भारत में मुगल वंश की स्थापना की।

प्रश्न 4. नया शीत युद्ध, प्रारम्भिक शीत युद्ध से किस प्रकार अलग था?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-25, पृष्ठ-218, प्रश्न 7

प्रश्न 5. चार प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए कि हड़प्पावासियों का दूसरे देशों के साथ व्यापारिक संबंध था।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, प्रश्न 3

अथवा

उत्तर वैदिक काल में आर्य संस्कृति के विस्तार के लिए उत्तरदायी किन्हीं चार कारकों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–उत्तर वैदिक काल में आर्य संस्कृति के विस्तार के निम्नलिखित कारण थे-

(i) अपने भौगोलिक विसतार के अंतर्गत आर्य भारत में सबसे पहले सप्त सिंधु-क्षेत्र में बसे, जहाँ सात नदियां थीं। वहाँ इन्हें कृषि करने के पर्याप्त साधन मिले।

(ii) उत्तर वैदिक काल तक भारत में लोहे का प्रयोग शुरू हो गया। लोहे की कुल्हाड़ी से घने जंगलों का सफाया करना आसान हो गया, जिसके कारण कृषि के लिए काफी क्षेत्र उपलब्ध हो गया।

(iii) धीरे-धीरे आर्यों के परिवार बढ़ने लगे, चित्रित घूसर-मृद् भाण्डों का कई स्थानों पर पाया जाना जनसंख्या की व्यापक वृद्धि को दर्शाया है।

(iv) उत्तर वैदिक काल में आर्यों के समाज का गठन किया। इस समय तक आर्यों का प्रसार हिमालय पर्वत से लेकर नर्मदा नदी तथा सिंधु नदी से लेकर बंगाल तक समस्त उत्तर भारत में हो गया था।

प्रश्न 6. वुड्स् योजना (वुड्स् डिस्पैच), 1854 की किन्हीं चार मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ 169 प्रश्न 4 (पाठगत प्रश्न 18.3)

अथवा

19वीं शताब्दी में सामाजिक तथा धार्मिक सुधारों को प्रोत्साहित करने वाले किन्हीं चार कारकों का वर्णन कीजिए।

Solved Sample Paper - 2

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

इतिहास– XII

(History-XII)

N-315

समय : 3 घंटे] **[कुल अंक : 100**

निर्देश: *(i)* इस प्रश्न-पत्र में कुल 51 प्रश्न हैं। *(ii)* सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। *(iii)* सभी खण्डों में **वैकल्पिक मॉड्यूल-6A** और **वैकल्पिक मॉड्यूल-6B** वाले प्रश्नों में से केवल एक विकल्प का ही उत्तर लिखना है। *(iv)* खण्ड-क *(a)* प्रश्न संख्या 1 से 20 तक बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) हैं, जिनमें प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है। इन प्रश्नों में दिए गए चार विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प को चुनकर उत्तर के रूप में लिखिए। इनमें से कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया हैं। ऐसे प्रश्नों में आपको केवल किसी एक विकल्प का ही उत्तर लिखना है। *(b)* प्रश्न संख्या 21 से 35 दो-दो अंक वाले वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न हैं। ऐसे प्रत्येक प्रश्न में 1 अंक के दो उपभाग हैं। इन प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशानुसार लिखिए। *(iv)* खण्ड-ख में *(a)* प्रश्न संख्या 36 से 41 अति लघुत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का हैं, जिसका उत्तर 30 से 50 शब्दों में लिखना हैं। *(b)* प्रश्न संख्या 42 से 47 लघुत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का हैं, जिसका उत्तर 50 से 80 शब्दों में लिखना हैं। *(c)* प्रश्न संख्या 48 से 50 दीर्घ-उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं तथा प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का हैं, जिसका उत्तर 80 से 120 शब्दों में लिखने हैं। *(d)* प्रश्न संख्या 51 मानचित्र आधारित प्रश्न है, जो 5 अंक का है। (दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए मानचित्र पर आधारित प्रश्न के स्थान पर वैकल्पिक प्रश्न दिए गए हैं)

NEERAJ PUBLICATIONS

खण्ड-क

प्रश्न 1. भारतीय पुरातत्व के जनक के रूप में किसे जाना जाता है?

(क) जॉन मार्शल
(ख) दया राम साहनी
(ग) जनरल सर अलेक्जेंडर कनिंघम
(घ) आर.डी. बनर्जी

उत्तर–(ग) जनरल सर अलेक्जेंडर कनिंघम।

प्रश्न 2. किस काल को 'पुराना पाषाण युग' कहा जाता है?

(क) पुरापाषाण युग (ख) मध्यपाषाण युग
(ग) नवपाषाण युग (घ) ताम्रपाषाण युग

उत्तर–(क) पुरापाषाण युग।

अथवा

निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा के लोगों का प्रमुख कृषि उत्पाद था?

(क) गन्ना (ख) मक्का
(ग) गेहूं (घ) कॉफी

उत्तर–(ग) गेहूं।

प्रश्न 3. ऋग्वैदिक भजनों में किस जानवर का बार-बार उल्लेख किया गया था और उसे उच्च सम्मान क्यों दिया गया था?

(क) गाय (ख) ऊँट
(ग) हाथी (घ) घोड़ा

उत्तर–(क) गाय।

प्रश्न 4. छठी और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच कौन-सा महाजनपद सबसे शक्तिशाली बन गया?

(क) काशी (ख) मगध
(ग) अवंती (घ) कौशल

उत्तर–(ख) मगध।

अथवा

मध्य गंगा मैदानी क्षेत्रों में किन दो प्रमुख धर्मों का उदय हुआ?

(क) बौद्ध और जैन (ख) हिन्दू और सिख
(ग) इस्लाम एवं पारसी (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(क) बौद्ध और जैन।

प्रश्न 5. पहली और दूसरी शताब्दी की शुरुआत में किस साम्राज्य का भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में तेजी से विस्तार हुआ?

(क) मौर्य साम्राज्य (ख) गुप्त साम्राज्य
(ग) कुषाण साम्राज्य (घ) शुंग साम्राज्य

उत्तर–(क) कुषाण साम्राज्य।

प्रश्न 6. गुप्त काल में विज्ञान का कौन-सा प्रमुख विकास हुआ?

(क) एंटीबायोटिक दवाओं की खोज
(ख) धातु विज्ञान में उन्नति
(ग) शून्य का आविष्कार
(घ) प्रिंटिंग प्रेस का विकास

उत्तर–(ख) धातु विज्ञान में उन्नति।

अथवा

कंबोडिया में कौन-सा मंदिर 12वीं शताब्दी की शुरुआत में राजा सूर्यवर्मन द्वितीय के लिए बनाया गया था?

(क) अंगकोरवाट (ख) बाराबुदुर
(ग) बृहदेश्वर मंदिर (घ) कोणार्क सूर्य मंदिर

उत्तर–(क) अंगकोरवाट।

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

इतिहास
(HISTORY)

प्राचीन भारत
(Ancient India)

भारत के इतिहास को समझना
(Understanding Indian History)

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

परिचय

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न स्रोत आवश्यक हैं। पुरातत्त्ववेत्ता विभिन्न स्रोतों की खोज करते हैं और इतिहास के वैज्ञानिक निर्माण की रूपरेखा तैयार की जाती है। इतिहासकारों से अपेक्षा की जाती है कि वे ऐतिहासिक प्रमाणों की सत्यता की जाँच करें। इतिहासकार एवं पुरातत्त्ववेत्ता ऐतिहासिक स्रोतों की खोज करके विभिन्न तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं, जिससे इतिहास लेखन को बल मिलता है। इतिहासकारों द्वारा विभिन्न ऐतिहासिक साक्ष्यों की विभिन्न स्रोतों से पुष्टि के बाद तथ्य को स्वीकारा जाता है। इतिहास का शाब्दिक अर्थ है, ऐसा हुआ अर्थात ऐसा ही हुआ। लिखित स्रोतों को इतिहास का प्रामाणिक स्रोत माना जाता था। मौखिक साक्ष्यों को सही स्रोत नहीं माना जाता था। लेकिन आज कई तरीकों से स्रोतों का उपयोग किया जा रहा है। धार्मिक साहित्य से इतिहास के पुनर्निर्माण में काफी सहायता मिलती है। धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार का साहित्य आ जाता है। वेदों की संख्या चार है–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्वेद इसके अतिरिक्त ब्राह्मण, आख्यक एवं उपनिषद भी धार्मिक साहित्य हैं। महत्त्वपूर्ण महाकाव्यों में 'रामायण' एवं 'महाभारत' हैं। रामायण में 24,000 श्लोक एवं महाभारत में एक लाख श्लोक हैं। सूत्रों में गृह्य सूत्र, श्रौत सूत्र एवं धर्मसूत्र महत्त्वपूर्ण हैं। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म का साहित्य भी काफी महत्त्वपूर्ण है। बौद्ध धर्म के साहित्य को तीन पिटकों में विभाजित किया गया है। ये हैं–सुत्तपिटक, विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक। बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत जातक ग्रंथों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ वर्णित हैं। जैन साहित्य की रचना प्राकृत भाषा में की गई जो 'अंग' कहलाते हैं। धार्मिकेतर साहित्य के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के ग्रंथ आते हैं। पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी', कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र', कालिदास कृत 'मेघदूत' एवं 'ऋतुसंहार', विशाखदत्त की 'मुद्राराक्षस', भास का 'स्वप्नवासवदत्ता', कल्हण की 'राजतरंगिणी', बाणभट्ट का 'हर्षचरित' इत्यादि। सभी प्रकार के धार्मिकेतर ग्रंथ इतिहास के पुनर्निर्माण में काफी महत्त्व रखते हैं। दक्षिण भारत का साहित्य संगम साहित्य कहलाता है। जिसकी रचना तमिल भाषा में की गई। संगम साहित्य से दक्षिण भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दशाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। गैर साहित्यिक स्रोतों में अभिलेख काफी महत्त्वपूर्ण हैं जिनसे इतिहास के पुनर्निर्माण में काफी सहायता मिलती है। इन अभिलेखों से तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक दशा का ज्ञान मिलता है। भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख हड़प्पा सभ्यता के हैं। परन्तु इन अभिलेखों को पढ़ने में अभी तक सफलता नहीं मिल पाई है। अशोक के अभिलेख महत्त्वपूर्ण है जिनको पढ़ा जा सका है और उस काल की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की गई हैं। अशोक के ज्यादातर अभिलेख ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा में हैं। ब्राह्मी लिपि को पढ़ने में सफलता सबसे पहले जेम्स प्रिंसेप को मिली। कालान्तर में अनेक शासकों ने अपने अभिलेख खुदवाए। अभिलेख विभिन्न

www.neerajbooks.com

शासकों के शासन का हाल जानने के लिए काफी महत्त्वपूर्ण स्रोत माने जाते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में विभिन्न प्रकार के सिक्कों का भी काफी महत्त्व है। सिक्के अधिकतर सोने, चाँदी, ताँबा, काँसा एवं शीशे के बनाए जाते थे। भारत में सबसे प्राचीन सिक्के ई.पू. छठी शताब्दी के हैं। इन्हें पंच मार्क्ड या आहत सिक्के कहा जाता है। इन सिक्कों पर किसी प्रकार का लेख उत्कीर्ण नहीं किया जाता था, परन्तु भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में यूनानियों के शासन की स्थापना के बाद से भातीय सिक्कों पर भी लेख एवं विभिन्न आकृतियाँ दृष्टिगत होने लगीं। भारत में सबसे पहले स्वर्ण मुद्रायें कुषाण शासकों ने चलायी थीं। सिक्कों से धार्मिक एवं व्यापारिक स्थिति पर काफी प्रकाश पड़ता है। पुरातत्त्व से भी इतिहास के विभिन्न युगों पर प्रकाश पड़ता है। खुदाई के दौरान अनेक प्रकार के भवनों के ढाँचे, मिट्टी के बर्तन, विभिन्न उपकरण, विभिन्न आभूषण एवं कई प्रकार की सामग्री से भी विभिन्न कालों की जानकारी प्राप्त होती है। पाषाण युग की जानकारी तो हमें केवल उत्खनित सामग्री से ही प्राप्त होती है। प्राचीन काल की वस्तुओं का सही काल जानने के लिए कार्बन-14 विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में वस्तुओं में स्थित कार्बन का परीक्षण किया जाता है।

विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांत भी इतिहास की जानकारी में काफी उपयोगी रहे हैं। समय-समय पर अनेक विदेशी यात्रियों ने भारत की यात्रा की। यूनानी शासक सेल्यूकस का राजदूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। उसने 'इण्डिका' नामक पुस्तक की रचना की थी। 'इण्डिका' से मौर्यकालीन प्रशासनिक, धार्मिक अवस्था एवं सामाजिक अवस्था पर काफी प्रकाश पड़ता है। कई चीनी यात्रियों ने भी भारत की यात्रा की। उनके लेखों से भी इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय भारत आया था। फाहियान ने तत्कालीन दशा का काफी अच्छा विवरण दिया है। ह्वेनसांग भी एक प्रसिद्ध चीनी यात्री था जिसने हर्षवर्धन के काल में भारत की यात्रा की थी। इतिहास की बदलती हुई अवधारणाओं के अन्तर्गत बहुत से विद्वान यह मानते हैं कि भारतीयों को इतिहास लेखन का कोई बोध नहीं था, परन्तु यह विचारधारा सही नहीं है। भारतीयों का इतिहास लेखन बोध पश्चिम से भिन्न था। पुराण एवं विभिन्न अभिलेख भारतीयों के इतिहास लेखन के प्रबल प्रमाण हैं। प्राचीन भारत के इतिहास में आधुनिक खोज 1765 के लगभग आरंभ हुई। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने भारतीय संस्कृति का काफी अध्ययन किया। ब्रिटिश शासकों ने भी शीघ्र ही समझ लिया कि भारतीयों पर शासन करने के लिए अनेक धर्मग्रंथों एवं विचारों को जानना आवश्यक है। ब्रिटिश लेखकों ने भारत के इतिहास को ब्रिटिश दृष्टिकोण से देखा। उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन को सही ठहराने का प्रयास किया। कुछ भारतीय विद्वानों ने ब्रिटिश लेखकों द्वारा भारतीय इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश करने की आलोचना की। भंडारकर, राजवाड़े एवं पी.वी. काणे जैसे विद्वानों ने भारतीय इतिहास में भारतीय संस्कृति के वास्तविक गौरव को पेश किया। एच.सी. रायचौधरी, आर.सी. मजूमदार एवं के.पी. जायसवाल जैसे विद्वानों ने इतिहास का पुनर्लेखन किया एवं उसके महत्त्व को लोगों के सामने रखा। स्वतंत्रता के बाद इतिहास लेखन की एक नई प्रवृत्ति उभरी अब इतिहास लेखन में राजनैतिक घटनाओं के साथ-साथ समाज एवं अर्थव्यवस्था के भी विभिन्न पहलुओं पर ध्यान दिया जाने लगा। ए.एल. बाशम एवं डी.डी. कोसाम्बी ऐसे ही लेखक थे जिन्होंने अपनी रचनाओं में समाज एवं अर्थव्यवस्था पर ज्यादा जोर दिया। इनका इतिहास लेखन सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों का विश्लेषण करता है। भारतीय इतिहास की विषयवस्तु के अन्तर्गत सभी पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। अर्थात् राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्ष। इन समस्त पक्षों के विभिन्न पहलुओं को भी जानना आवश्यक है। इस अध्याय में उपर्युक्त वर्णित विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय इतिहास के प्रभाव और महत्त्व का भी विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.1

प्रश्न 1. चारों वेदों के नाम बताइए।

उत्तर–भारत में आर्यों का आगमन एक महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है। हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात भारत में आर्यों का आगमन हुआ। इन आर्यों की सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है। वेदों की संख्या चार हैं– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद। इन वेदों से मूल निवास स्थान, आर्यों का प्रसार, आर्यों के धर्म एवं रीति-रिवाजों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इनमें ऋग्वेद को संसार की सबसे प्राचीन साहित्यिक कृति मानी जाती है। मुख्य रूप से इन वेदों का रचना काल 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. के लगभग माना जाता है।

प्रश्न 2. संस्कृत व्याकरण का सर्वप्रथम ग्रंथ कौन.सा है?

उत्तर–संस्कृत व्याकरण का सर्वप्रथम ग्रंथ पाणिनीकृत 'अष्टाध्यायी' है। इसके रचयिता पाणिनी भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम के सीमाप्रान्त के शालातुर ग्राम के निवासी थे। इनका ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' इनकी व्याकरण की अपनी सूक्तों और सूत्रपद्धति के ग्रंथों में बेजोड़ है। पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' में तत्कालीन इतिहास का अच्छा चित्रण किया गया है। इस ग्रंथ के रचयिता को लगभग 22 जनपदों का ज्ञान था।

प्रश्न 3. जातक से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने में ब्राह्मण साहित्य के समान ही बौद्ध साहित्य भी काफी महत्त्वपूर्ण है। बौद्धों के

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

धार्मिक सिद्धान्त प्रमुखत: तीन पिटकों में संगृहीत हैं। विनयपिटक, सुत्तपिटक और अभिधम्मपिटक। जातक से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियां संगृहीत हैं। सुत्तपिटक के अन्तर्गत जातक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 4. दक्षिण भारत के संगम साहित्य की भाषा क्या है?

उत्तर–दक्षिण भारत की सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी हमें संगम साहित्य से प्राप्त होती है। वास्तव में सुदूर दक्षिण के जन-जीवन पर सबसे पहले संगम साहित्य से ही स्पष्ट प्रकाश पड़ता है। संगम साहित्य निम्नलिखित संकलनों में प्राप्त हैं– नरिंणई, कुरून्तोगई, ऐन्गुरूनूरू, पतुप्पटटु, परिपाड्ल, कलित्तोगई, अहनानरू और पुरूनानरू और ये सभी संगम साहित्य तमिल भाषा में रचित हैं। इन संकलनों में जो आज 2289 रचनाएं उपलब्ध हैं इनमें से कुछ कविताएं तो अत्यंत छोटी एवं कुछ कविताएं काफी लम्बी हैं।

प्रश्न 5. 'उपनिषद्' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–आर्यों के साहित्य के अंतर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक आदि आते हैं। आरण्यकों के बाद उपनिषदों का स्थान आता है। उपनिषदों से हमें आर्यों के प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे कि सृष्टि की रचना किसने की? जीव क्या है? मृत्यु के बाद जीव का क्या होता है? ईश्वर का स्वरूप क्या है? मनुष्य को वास्तविक सुख किस प्रकार मिल सकता है? आदि। उपनिषद में 'उप' का अर्थ है 'समीप' और 'निषद' का अर्थ है 'बैठना'। इस प्रकार उपनिषद का अर्थ हुआ समीप बैठना। इनसे कुछ विद्वानों ने यह आशय निकाला है कि जिस रहस्य विद्या का ज्ञान गुरु के समीप बैठकर प्राप्त किया जाता था, उसे 'उपनिषद' कहते थे। अन्य विद्वानों का मत है कि उपनिषद का अर्थ उस विद्या से है जो मनुष्य को ब्रह्म के समीप बैठा देती है अथवा उसे आत्मज्ञान करा देती है। उपनिषदों की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा यह है कि जीवन का उद्देश्य मनुष्य की आत्मा का विश्व की आत्मा से मिलना है। उसी से मनुष्य को वास्तविक सुख मिल सकता है। इसको 'पराविद्या' या 'अध्यात्मविद्या' कहा गया है। उपनिषदों में यान्त्रिक यज्ञों के स्थान पर ज्ञान-यज्ञ का प्रतिपादन किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.2

प्रश्न 1. उत्कीर्ण लेखों का अध्ययन क्या कहलाता है?

उत्तर–इतिहास लेखन में पुरातात्त्विक स्रोतों का काफी महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुरातात्त्विक स्रोतों से ही इतिहास के अनसुलझे पहलू हमारे सामने अनावृत्त हो जाते हैं। इन पुरातात्त्विक स्रोतों में अभिलेखों का महत्त्व भी कम नहीं है। अभिलेखों या उत्कीर्ण लेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र या पुरालेख विद्या कहते हैं।

प्रश्न 2. प्रशस्ति किसे कहते हैं?

उत्तर–भारतीय इतिहास में प्राचीन काल से ही यह परम्परा रही है कि महान शासकों के आश्रय में उनके कवियों ने अपने सम्राट की प्रशंसा में काव्य ग्रंथों की रचना की। कवियों ने इन काव्य ग्रंथों में अपने आश्रयदाता सम्राटों के गुणों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है और जब काव्य ग्रंथ किसी शिलालेख पर उत्कीर्ण कराया जाता है तो उसे प्रशस्ति कहा जाता है। इनमें राजाओं की यशोगाथा होती है या लोगों द्वारा धार्मिक उद्देश्य से किए गए दान-पुण्य का उल्लेख होता है। अन्य शब्दों में, कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा एवं उनकी कीर्ति को बढ़ाने के लिए जिन अभिलेखों की रचना की, तथा इन्हें प्रशस्ति नाम दिया।

प्रश्न 3. पुरालिपि शास्त्र (Palaeology) की परिभाषा दीजिए।

उत्तर–लिपियों के अध्ययन को पुरालिपि शास्त्र कहते हैं। अभिलेखों से उनके शासकों से सम्बन्धित काफी महत्त्वपूर्ण जानकारी हासिल होती है। लेकिन कुछ अभिलेखों में तिथि के अभाव के कारण जानकारी का स्पष्ट निर्धारण संभव नहीं होता। इस स्थिति में उस अभिलेख को लिपि के आधार पर या लेखन शैली के आधार पर अभिलेखों के अध्ययन को पुरा लिपि शास्त्र के अन्तर्गत रखा जाता है।

प्रश्न 4. अशोक के अधिकतर शिलालेख किस लिपि में लिखे गए हैं?

उत्तर–मौर्यकाल भारत के इतिहास के सबसे गौरवपूर्ण साम्राज्यों में से एक था। इस काल में भारतवर्ष ने सभी क्षेत्रों में उन्नति की पराकाष्ठा को स्पर्श किया। मौर्यकाल के विषय में सम्पूर्ण जानकारी मौर्य शासकों के अभिलेखों से मिलती है। विशेषकर अशोक के अभिलेखों द्वारा। अशोक को अभिलेखों में प्रियदर्शी अर्थात् देवताओं का प्रिय राजा कहा गया है। अशोक के अधिकतर शिलालेखों की लिपि ब्राह्मी है एवं भाषा प्राकृत है, जो तत्कालीन सामान्यजन की भाषा थी। यह लिपि बायें से दायें लिखी जाती थी। इस लिपि से भारत की हिन्दी, पंजाबी, बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि सभी भाषाओं की लिपियों का विकास हुआ है।

पाठगत प्रश्न 1.3

प्रश्न 1. सिक्कों के अध्ययन को क्या कहा जाता है?

उत्तर–प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी देने में अभिलेख एवं अन्य पुरातात्त्विक सामग्री के अलावा सिक्के भी काफी महत्त्वपूर्ण हैं। चूँकि विभिन्न कालों में विभिन्न शासक वंशों ने सिक्के जारी करवाये, इसलिए सिक्कों से उस शासक वंश के बारे मे जानना काफी आसान हो जाता है। सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते हैं। मुद्राशास्त्र के अन्तर्गत सिक्कों पर

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उकेरी हुई लिपि और आकृतियों जैसे दृश्य तत्त्व ही नहीं बल्कि धातुओं के विश्लेषण जैसे तत्त्व भी आ जाते हैं। सिक्कों के अध्ययन का महत्त्व इस कथन से समझा जा सकता है कि 206 ई.पू. से लेकर 300 ई. तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें प्रमुखत: सिक्कों से ही होता है।

प्रश्न 2. आहत (पंच मार्क्ड) सिक्कों में किन धातुओं का प्रयोग होता था?

उत्तर–भारत में सिक्कों का प्रचलन कब से शुरू हुआ यह एक विचारणीय प्रश्न है। आमतौर पर यह माना जाता है कि सबसे पहले हमें जो सिक्के प्राप्त होते हैं वे ई.पू. छठी शताब्दी के हैं और ई.पू. छठी शताब्दी से ही भारत मे सिक्कों का प्रचलन शुरू हुआ। इन सिक्कों को 'आहत सिक्के' या 'पंचमार्क्ड' सिक्के भी कहा जाता है, क्योंकि इनके मुख्य भाग पर 5 चिह्न उत्कीर्ण होते थे।, प्राचीन सिक्के अधिकतर ताँबा, चाँदी, सोना तथा सीसा जैसी धातुओं से निर्मित किए जाते थे।

प्रश्न 3. भारत में पहले-पहल किस राजवंश ने सोने के सिक्कों को जारी किया था?

उत्तर–भारत में सबसे पहले सोने के सिक्कों को कुषाण शासकों ने जारी किया। कुषाण शासकों में भी सबसे पहले वीम कदफिसस ने चलाये। वीम के समय से ही स्वर्ण सिक्कों का प्रचार आरंभ हुआ और कनिष्क तथा उसके उत्तराधिकारी हुविष्क के काल में नाना प्रकार के स्वर्ण-सिक्के भारी संख्या में बनने लगे।

पाठगत प्रश्न 1.4

प्रश्न 1. 'पुरातत्व शास्त्र' की परिभाषा दीजिए।

उत्तर–प्राचीन काल के अध्ययन के लिए पुरातात्त्विक सामग्री का विशेष महत्त्व होता है और भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए इस पुरातात्त्विक सामग्री का अध्ययन जिस शास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है उसे पुरातत्त्व शास्त्र की संज्ञा दी जाती है।

प्रश्न 2. सी-14 काल-निर्धारण की उपयोगिता समझाइए।

उत्तर–इतिहास के अन्तर्गत पुरातात्त्विक सामग्री को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, लेकिन इन पुरातत्त्व सम्बन्धी वस्तुओं के सही काल-निर्धारण की आवश्यकता होती है, ताकि इनके द्वारा दी गयी महत्त्वपूर्ण जानकारी भ्रमित न करें। खुदाई से प्राप्त अवशेषों की प्राचीनता या काल का निर्धारण करने की वर्तमान में कई पद्धतियाँ प्रचलित हैं। उत्खनन के फलस्वरूप जो भी वस्तुएं या भौतिक अवशेष प्राप्त होते हैं, उनका सबसे पहले वैज्ञानिक परीक्षण किया जाता है ताकि यह जानकारी प्राप्त की जा सके कि भौतिक अवशेष कितने प्राचीन हैं। पुरातत्त्व सम्बन्धी वस्तुओं का काल-निर्धारण के लिए वर्तमान में एक पद्धति प्रचलित है, जिसे रेडियो कार्बन या कार्बन-14 (सी-14) काल निर्धारण पद्धति कहते हैं।

पाठगत प्रश्न 1.5

प्रश्न 1. 'इंडिका' किसने लिखी?

उत्तर–मौर्य साम्राज्य की स्थापना से भारत में एक नये युग की शुरुआत हुई। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस ने भारत पर आक्रमण कर दिया, लेकिन वह चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित हुआ। परिणामस्वरूप दोनों के बीच मैत्री-सन्धि हो गयी और सेल्यूकस ने अपना राजदूत मेगस्थनीज मौर्य दरबार में भेजा। मेगस्थनीज ने भारत में जो भी देखा-सुना उसे एक पुस्तक का रूप दे दिया और इस पुस्तक का नाम 'इंडिका' रखा। दुर्भाग्यवश यह पुस्तक विलुप्त हो गई है, परन्तु इस पुस्तक के अनेक उद्धरण परवर्ती लेखकों–स्ट्रेबो, प्लिनी, एरियन आदि के ग्रंथों में सुरक्षित हैं। डॉ. स्वानबेक ने सर्वप्रथम 1846 में इन समस्त उद्धरणों को संगृहीत करके प्रकाशित किया था।

प्रश्न 2. भारत आने वाले चीनी यात्रियों के नाम बताइए।

उत्तर–भारत आने वाले चीनी यात्रियों में फाहियान, ह्वेनसांग एवं इत्सिंग महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 3. नालंदा विश्वविद्यालय के उत्कर्ष का उल्लेख किस चीनी यात्री ने किया?

उत्तर–नालंदा विश्वविद्यालय के उत्कर्ष का उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग ने किया। ह्वेनसांग हर्ष के समय भारत आया था। ह्वेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में लगभग छ: वर्ष तक अध्ययन किया था। ह्वेनसांग के अनुसार नालंदा विश्वविद्यालय उस युग का सर्वप्रमुख शिक्षा केन्द्र था। ह्वेनसांग ने इस विश्वविद्यालय के अध्यक्ष आचार्य शीलभद्र से योग की शिक्षा प्राप्त की। ह्वेनसांग के अनुसार नालंदा एक स्नातकोत्तर विश्वविद्यालय था, जिसमें उस समय के सभी राज्यों एवं प्रान्तों के विद्यार्थी और शिक्षक थे। विद्यार्थियों की संख्या लगभग 9000 थी एवं 1500 के लगभग शिक्षक इस विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य कराते थे। नालंदा विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को काफी कठिन परीक्षा के बाद ही प्रवेश मिल जाता था।

पाठगत प्रश्न 1.6

प्रश्न 1. स्वतंत्रता के बाद इतिहास लेखन में उभरी प्रवृत्ति पर प्रकाश डालें।

उत्तर–इतिहास लेखन सदा से ही एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा है। प्राचीन भारत में इतिहास लेखन किया जाता रहा था। मध्यकाल में भी इतिहास लेखन का कार्य चलता रहा। आधुनिक काल में भी इतिहास लेखन की प्रवृत्ति जारी रही। हालांकि इस काल में अंग्रेजों ने इसे अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश की। स्वतंत्रता के बाद इतिहास लेखन में कुछ नई प्रवृत्तियों का आगमन हुआ जो पिछले कालों में प्रचलित इतिहास लेखन की

www.neerajbooks.com